कार्ल मार्क्स (1867)

पूँजी

पहली पुस्तक

पूंजीवादी उत्पादन

पूंजी — प्रथम खंड

भाग 1 पण्य और द्रव्य

अध्याय 3 | द्रव्य , या पण्यों का परिचलन

अनुभाग-1 मूल्यों की माप

अनुभाग 2--परिचलन का माध्यम

क) पण्यों का रूपांतरण

ख) द्रव्य का चलन

ग) सिक्का और मूल्य के प्रतीक

अनुभाग 3– द्रव्य

क) अपसंचय

ख) भुगतान के साधन

ग) सार्विक रूप

अनुभाग 1 – मूल्यों की माप

इस सारी रचना में मैं सरलता की खातिर यह मानकर चलूँगा कि द्रव्य का काम करनेवाला पण्य सोना है ।

द्रव्य का पहला मुख्य कर्तव्य यह है कि वह पण्यों को उनके मूल्यों की अभिव्यक्ति के लिए सामग्री प्रदान करें, या यह कि उनके मूल्यों को एक ही मान के ऐसे परिमाणों के रूप में व्यक्त करें, जो गुणात्मक दृष्टि से समान और मात्रा की दृष्टि से तुलनीय हों. इस प्रकार द्रव्य मूल्य की सार्विक माप का काम करता है. सिर्फ यह काम करने के कारण ही सोना, जो par excellence [सबसे उत्तम] समतुल्य पण्य है, द्रव्य बन जाता है ।

द्रव्य पण्यों को एक ही मापदंड से मापने के योग्य बनाता है, ऐसा नहीं है । बात ठीक इसकी उलटी है । मूल्यों के रूप में तमाम पण्य चूँकि मूर्त मानव-श्रम होते हैं और इसलिए उनको चूँकि एक ही मापदंड से मापा जा सकता है, यही कारण है कि उनके मूल्यों को एक ही खास अर्थात द्रव्य में -बदला जा सकता है । मूल्य की माप के तौर पर द्रव्य वह इन्द्रियगम्य रूप होता है, जो पण्यों में निहित मूल्य की माप -यानी श्रम-काल – को लाजिमी तौर पर धारण करना पड़ता है ।[49]

किसी पण्य का मूल्य जब सोने के रूप में व्यक्त होता है, यानी जब क पण्य का x परिमाण = द्रव्य-पण्य का y परिमाण, तब वह उसका द्रव्य-रूप, अथवा दाम, होता है । अब केवल एक ही समीकरण, जैसे १ टन सोना – २ आउंस सोना, लोहे के मूल्य को सामाजिक दृष्टि से मान्य ढंग से व्यक्त करने के लिए पर्याप्त होता है । अब इसकी कोई आवश्यकता नहीं रह जाती कि यह समीकरण बाकी तमाम पण्यों के मूल्यों को व्यक्त करनेवाले समीकरण की श्रृंखला की एक कड़ी बनकर सामने आये । कारण कि अब समतुल्य का काम करनेवाले पण्य – सोने – ने द्रव्य का रूप धारण कर लिया है । सापेक्ष मूल्य के सामान्य रूप ने फिर से सरल सापेक्ष मूल्य की विस्तारित अभिव्यंजना, यानी समीकरणों का वह अंतहीन क्रम अब द्रव्य-पण्य के सापेक्ष मूल्य के लिए ही विशिष्ट रूप बन गया है । यह क्रम खुद भी अब पहले से दिया हुआ है और वास्तविक पण्यों के दामों के रूप में उसे सामाजिक मान्यता प्राप्त है । दामों की कोई सूची लेकर उसमें दिए हुए भावों को उल्टी तरफ से पढना शुरू कर दीजिये, आपको तरह-तरह के पण्यों के रूप में द्रव्य के मूल्य का परिमाण मालूम हो जायेगा । लेकिन खुद द्रव्य का कोई दाम नहीं होता । इस दृष्टि से उसे अन्य सब पण्यों के साथ बराबरी के दर्जे पर रखने के लिए हमें खुद उसे ही उसका समतुल्य मानकर खुद उसके साथ ही उसका समीकरण करना पड़ेगा.

पण्यों का दाम अथवा द्रव्य-रूप उनके सामान्य तौर पर मूल्य-रूप की भांति, उनके इन्द्रियगम्य शारीरिक रूप से बिल्कुल भिन्न होता है, इसलिए वह एक विशुद्ध प्रत्ययात्मक अथवा मानसिक रूप है । लोहे, कपड़े और अनाज का मूल्य यद्यपि दिखाई नहीं देता, तथापि इन्हीं वस्तुओं के भीतर उसका वास्तविक अस्तित्व होता है : सोने के साथ इन वस्तुओं की समानता करके मूल्य प्रत्ययात्मक ढंग से बोधगम्य बना दिया जाता है, यानी वह एक ऐसे संबंध द्वारा बोधगम्य बनाया जाता है, जिसका अस्तित्व मानो केवल इन वस्तुओं के मस्तिष्क में ही है । अतएव इन वस्तुओं के मालिक को या तो जबान इस्तेमाल करनी होगी या उनपर पर्ची टांगनी पड़ेगी, ताकि बाहरी दुनिया को उनके दामों का पता चल सके ।[50] सोने के रूप में पण्यों के मूल्य को अभिव्यक्त

करना क्योंकि महज एक प्रत्ययमुल्क कार्य है, अत : हम उसके लिए काल्पनिक, अथवा प्रत्ययात्मक, द्रव्य का भी प्रयोग कर सकते हैं । हर व्यापारी जानता है कि अपने पण्य का मूल्य दाम के रूप में या किसी काल्पनिक द्रव्य के रूप में व्यक्त करके ही वह उसे द्रव्य में बदलने में कामयाब नहीं हो जाता, वह तो तब भी बहुत दूर की बात रहती है. हर व्यापारी यह भी जानता है कि लाखों और करोड़ों पाउंड की कीमत के सामान के मूल्य का सोने के रूप में अनुमान लगाने के लिए उसे वास्तविक सोने के जरा से टुकड़े की भी आवश्यकता नहीं पड़ती. इसलिए द्रव्य जब मूल्य की माप का काम करता है, तब वह केवल काल्पनिक अथवा प्रत्ययात्मक द्रव्य के रूप में इस्तेमाल किया जाता है । इसके फलस्वरूप हद से ज्यादा अजीबोगरीब सिद्धांत प्रस्तुत किये गये है ।[51] . लेकिन मूल्य की माप का काम करनेवाला द्रव्य हालाँकि केवल प्रत्ययात्मक द्रव्य होता है, फिर भी दाम सर्वथा उस वास्तविक पदार्थ पर ही निर्भर करता है, जो द्रव्य कहलाता है । एक टन लोहे में जो मूल्य , अथवा मानव-श्रम की जितनी मात्रा, निहित है, वह कल्पना में द्रव्य-पण्य के एक ऐसे परिमाण के द्वारा व्यक्त की जाती है, जिसमें लोहे के बराबर श्रम निहित है । इसलिए जब मूल्य की माप का काम सोना करेगा और जब यह काम चाँदी करेगी या तांबा करेगा, तब हर बार एक टन लोहे का मूल्य बहुत ही भिन्न दामों में व्यक्त किया जागेगा, या यूँ कहिए कि उसका दाम इन धातुओं के क्रमश : बहुत भिन्न परिमाणों द्वारा व्यक्त किया जायेगा ।

इसलिए यदि एक समय में दो अलग-अलग पण्य, जैसे सोना और चाँदी मूल्य की माप का काम करते हैं, तो तमाम पण्यों के दो दाम होते हैं – एक सोने वाला दाम और दूसरा चाँदी वाला दाम । जब तक सोने के मूल्य के साथ चाँदी के मूल्य का अनुपात नहीं बदलता, मिसाल के लिए, जब तक कि वह १५:१ पर स्थिर रहता है, तब तक ये दोनों प्रकार के दाम चुपचाप साथ-साथ चलते रहते हैं. पर उनके अनुपात में होनेवाला प्रत्येक परिवर्तन पण्यों के सोने वाले दामों और चाँदी वाले दामों के अनुपात को गड़बड़ा देता है और इस तरह यह साबित कर देता है कि मूल्य का दोहरा मापदंड रखना मापदंड के कामों से मेल नहीं खाता ।[52]

जिन पण्यों के निश्चित दाम होते हैं, वे इस रूप में सामने आते हैं : क पण्य का a = सोने का x, ख पण्य का b , सोने का z , ग पण्य का c, सोने का y , इत्यादि ; यहाँ a, b, और c, क, ख और ग नामक पण्यों के निश्चित परिमाणों का और x, z और y सोने की निश्चित मात्राओं का प्रतिनिधित्व करते हैं. इसलिए इन पण्यों के मूल्य हमारी कल्पना में सोने की भिन्न-भिन्न मात्राओं में बदल जाते हैं । और इसलिए दिमाग को उलझन में डालने वाले तरह-तरह के पण्य होने के बावजूद उनके मूल्य एक ही मान की मात्राओं में, यानी सोने की मात्राओं में बदल जाते हैं । अब उनका एक-दूसरे के साथ मुकाबला किया जा सकता है और उनको मापा जा सकता है, और इस बात की प्राविधिक आवश्यकता महसूस होती है कि माप की इकाई के रूप में सोने की किसी एक निश्चित मात्रा से उनकी तुलना की जाये । यह इकाई बाद में अशेषभाजक खंडों में बंट जाने के फलस्वरूप खुद मापदंड, अथवा पैमाना, बन जाती है. सोने, चाँदी और तांबे के पास द्रव्य बनने के पहले से ही अपने तौल के मापदंड के रूप में इस प्रकार के मापदंड, मौजूद होते हैं; चुनांचे, मिसाल के लिए, यदि एक पाउंड का तौल इकाई का काम करता है, तो उसको एक तरफ तो आउंसों में बांटा जा सकता है और दूसरी तरफ, अनेक पौंडों का जोड़ करके हंड्रेडवेट तैयार किये जा सकते हैं ।[53] यही कारण है कि जितनी भी मुद्राएँ प्रचलित हैं, उनमें द्रव्य के,

अथवा दाम के, मापदन्डों को जो नाम दिए गये हैं, वे शुरू में पहले से मौजूद तौल के मापदन्डों के नामों से लिए गये थे ।

मूल्य की माप के रूप में और दाम के मापदंड के रूप में द्रव्य को दो बिल्कुल अलग-अलग ढंग के काम करने पड़ते है । वह चूँकि मानव-श्रम का सामाजिक दृष्टि से मान्य अवतार होता है, इसलिए वह मूल्य की माप का काम करता है, और चूँकि वह एक निश्चित तौल की धातु होता है, इसलिए वह दाम के मापदंड का काम करता है । मूल्य की माप के रूप में वह नाना प्रकार के पण्यों के मूल्यों को दामों में -यानी सोने की काल्पनिक मात्राओं में – बदलने का काम करता है, और दाम के मापदंड के रूप में वह सोने की इन मात्राओं को मापने का काम करता है । मूल्यों की माप से पण्यों को मूल्यों के रूप में मापा जाता है ; इसके विपरीत दाम के मापदंड से सोने की मात्राओं को इकाई के रूप में मान ली गयी सोने की एक खास मात्रा से मापा जाता है, और ऐसा नहीं होता कि सोने की एक मात्रा का मूल्य दूसरी मात्रा के तौल से मापा जाये । सोने को दाम का मापदंड बनाने के लिए एक निश्चित तौल को इकाई मानना जरूरी होता है । यहाँ पर, और यहाँ पर ही क्यों, जहाँ पर भी एक ही मान की मात्राओं को मापना आवश्यक होता है, वहीं यह बात सर्वाधिक महत्त्व प्राप्त कर लेती है कि माप की कोई ऐसी इकाई स्थापित की जाये, जिसमें कोई हेर-फेर न हो । इसलिए इस इकाई में जितना कम हेर-फेर होता है, दाम का मापदंड उतनी ही अच्छी तरह अपना काम करता है । लेकिन सोना मूल्य की माप का काम केवल उसी हद तक कर सकता है, जिस हद तक कि वह खुद श्रम का उत्पाद है और इसलिए खुद उसके मूल्य में हेर-फेर होने की हमेशा संभावना रहती है । [54]

सबसे पहले तो यह बात बिल्कुल साफ है कि सोने के मूल्य में परिवर्तन हो जाने से दाम के मापदंड के रूप में उसके काम में कोई अंतर नहीं आता । उसके इस मूल्य में चाहे जितना परिवर्तन हो जाये, धातु की अलग-अलग मात्राओं के मूल्यों का अनुपात बराबर एक सा ही रहता है । सोने का मूल्य चाहे जितना नीचे क्यों न गिर जाये, १२ आउंस सोने का मूल्य तब भी १ आउंस सोने के मूल्य का बारह गुना ही रहेगा । जहाँ तक दामों का संबंध है, अकेली चीज जिसे ध्यान में रखा गया है, वह सोने की विभिन्न मात्राओं का आपसी संबंध है । दूसरी ओर, चूँकि एक आउंस सोने का मूल्य घटने या बढ़ जाने से उसके तौल में कोई तब्दीली नहीं आती, इसलिए उसके अशेषभाजक खंडों के तौल में भी कोई परिवर्तन नहीं आ सकता । इस प्रकार सोने के मूल्य में चाहे जितना हेर-फेर हो जाये, वह दामों के अपरिवर्तनीय मापदंड के रूप में सदा एक सा काम देता है ।

दूसरी बात यह है कि सोने के मूल्य में परिवर्तन हो जाने से मूल्य की माप के रूप में उसके कामों में कोई अंतर नहीं आता । इस परिवर्तन का सभी पण्यों पर एक साथ प्रभाव पड़ता है, और इसलिए caeteris paribus [अन्य बातें यदि समान रहती हैं, तो] तमाम पण्यों के सापेक्ष मूल inter se [आपस में] ज्यों के त्यों रहते हैं, हालाँकि ये मूल्य अब सोने के पहले से ऊँचे या नीचे दामों में व्यक्त किये जाते हैं ।

जैसे जब हम किसी पण्य के मूल्य का अनुमान किसी अन्य पण्य के उपयोग-मूल्य की एक निश्चित मात्रा द्वारा करते हैं, वैसे ही उस पण्य के मूल्य का सोने के रूप में अनुमान लगाते समय भी हम इसमें अधिक और कुछ नहीं मानकर चलते कि किसी भी काल में सोने की एक निश्चित मात्रा के उत्पादन में श्रम की एक खास मात्रा

खर्च होती है । जहाँ तक दामों के आम उतार-चढाव का संबंध है, वे प्राथमिक सापेक्ष मूल्य के उन नियमों के अधीन रहते हैं, जिनकी हम पहले अध्याय एक में छानबीन कर चुके हैं ।

सामान्य रूप से पण्यों के दाम तभी चढ़ सकते हैं, जब या तो द्रव्य का मूल्य स्थिर रहते हुए पण्यों के मूल्य बढ़ जाएँ या पण्यों के मूल्य स्थिर रहते हुए द्रव्य का मूल्य घट जाये । दूसरी तरफ, सामान्य रूप से पण्यों के दाम तभी गिर सकते हैं, जब या तो द्रव्य का मूल्य स्थिर रहते हुए पण्यों का मूल्य घट जाएँ या पण्यों के मूल्य स्थिर रहते हुए द्रव्य का मूल्य चढ़ जाये. अतएव इससे यह निष्कर्ष कदापि नहीं निकलता कि द्रव्य का मूल्य बढ़ जाने पर पण्यों के दाम लाजिमी तौर पर उसी अनुपात में घट जाते हैं या द्रव्य का मूल्य घट जाने पर पण्यों के दाम लाजिमी तौर पर उसी अनुपात में बढ़ जाते हैं । इस प्रकार परिवर्तन केवल उन्हीं पण्यों के दामों में होता है, जिनका मूल्य स्थिर रहता है । मिसाल के लिए, जिन पण्यों का मूल्य द्रव्य के मूल्य की वृद्धि के साथ-साथ और उसी अनुपात में बढ़ जाता है, उनके दामों में कोई परिवर्तन नहीं होता । यदि उनका मूल्य द्रव्य के मूल्य की अपेक्षा धीमी या तेज गति से बढ़ता है, तो उनके दामों का उतार या चढाव इस बात से निर्धारित होगा कि उनके मूल्य में जो परिवर्तन आया है और द्रव्य के मूल्य में जो परिवर्तन हुआ है, उनके बीच कितना अंतर है, इत्यादि.

आईये, अब हम पीछे लौटकर दाम-रुप पर विचार करें ।

द्रव्य का काम करनेवाली बहुमूल्य धातु के अलग-अलग वजनों के चालू द्रव्य-नामों और इन नामों द्वारा शुरू में जिन वास्तविक वजनों को व्यक्त किया जाता था, उनके बीच धीरे-धीरे एक असंगति पैदा हो जाती है । यह असंगति कुछ ऐतिहासिक कारणों से पैदा होती है । इनमें से मुख्य कारण ये हैं : (१) अपर्याप्त विकास वाले समाज में विदेशी मुद्रा का आयात । यह बात रोम में उसके प्रारंभिक दिनों में हुई थी, जब वहाँ सोने और चाँदी के सिक्कों का विदेशी पण्यों के रूप में पहले-पहल परिचलन आरंभ हुआ था । इन विदेशी सिक्कों के नाम देशी तौलों के नामों से कभी मेल नहीं खाते थे. (२) जैसे-जैसे दौलत बढती जाती है, वैसे-वैसे अधिक मूल्यवान धातु मूल्य की माप के रूप में कम मूल्यवान धातु का स्थान ग्रहण करती जाती है । परिवर्तन का यह क्रम कवियों के काल्पनिक काल-क्रम के चाहे जितना उल्टा पड़ता हो, पर तांबे का स्थान चाँदी ले लेती है और चाँदी का स्थान सोना ।[55] उदाहरण के लिए, पाउंड शब्द शुरू में सचमुच एक पाउंड वजन की चाँदी के द्रव्य-नाम के तौर पर इस्तेमाल किया जाता था । जब मूल्य की माप के रूप में चाँदी का स्थान सोने ने ले लिया, तो सोने और चाँदी के मूल्यों के बीच जो अनुपात था, उसका ध्यान रखते हुई यही शब्द संभवत: पाउंड के १/१५ वजन के बराबर सोने के लिए इस्तेमाल होने लगा । इस तरह पाउंड शब्द के मुद्रा-नाम और तौल-नाम में अंतर हो जाता है ।[56]तीसरा कारण था राजाओं और बादशाहों का सदियों तक सिक्कों में खोट मिलाना और इस चीज का इस हद तक बढ़ जाना कि सिक्कों का मौलिक वजन लगभग गायब हो गया और केवल नाम बाकी रह गया ।[57]

इन ऐतिहासिक कारणों के फलस्वरूप द्रव्य-नाम का तौल-नाम से अलग हो जाना समाज के लोगों की पक्की आदत का हिस्सा बन गया । द्रव्य का मापदंड चूँकि एक ओर तो केवल रूढिगत है और दूसरी ओर, चूँकि उसे

सार्वजनिक मान्यता प्राप्त होनी चाहिए, इसलिए अंत में उसका कानून द्वारा नियमन होने लगता है । किसी एक बहुमूल्य धातु का कोई निश्चित वजन, जैसे, मिसाल के लिए, एक आउंस सोना, सरकारी तौर पर अशेषभाजक खंडों में बांटा जाता है, जिन्हें कानूनी तौर पर कुछ खास नाम, जैसे पाउंड, डालर, आदि दे दिए जाते हैं. ये खंड, जो इसके बाद से द्रव्य की इकाईयों का काम करने लगते हैं , आगे और निश्चित खंडों में बाँट दिए जाते हैं और इनको शिलिंग, पेनी, आदि जैसे कुछ कानूनी नाम दे दिए जाते हैं ।[58] लेकिन इस तरह का बंटवारा होने के पहले भी और बाद में भी धातु का एक निश्चित वजन ही धातु-द्रव्य का मापदंड रहता है । अंतर केवल यह पड़ता है कि इसके भाग हो जाते हैं और नये नाम दे दिए जाते हैं ।

अतएव पण्यों के मूल्यों को जिन दामों में, अथवा सोने की जिन मात्राओं में, प्रत्ययात्मक ढंग से बदल दिया गया है, उन्हें सिक्कों के नामों द्वारा, या हूँ कहिये कि सोने के मापदंड के उपभागों के क़ानूनी तौर पर मान्य नामों द्वारा, व्यक्त किया जाने लगता है । चुनांचे यह कहने की बजाय कि एक क्वार्टर गेहूं की कीमत एक आउंस सोना है, अब हम यह कहते हैं कि उसकी कीमत ३ पौंड १७ शिलिंग और साढ़े १० पेंस है । इस तरह, दामों के जरिये पण्य यह बताते हैं कि उनकी कितनी कीमत है, और जब कभी किसी वस्तु के मूल्य को उसके द्रव्य-रूप में निश्चित करने का सवाल होता है, तब द्रव्य हिसाब के द्रव्य, या लेखा-द्रव्य, का कार्य संपन्न करता है ।[59]

किसी भी वस्तु का नाम उसके गुणों से भिन्न चीज होता है. यह जानकर कि फलां आदमी का नाम जैकब है, मुझे उसके बारे में कुछ भी जानकारी नहीं होती । इसी प्रकार द्रव्य के संबंध में भी पाउंड, डालर, फ्रांक, डुकाट, आदि नामों में मूल्य-संबंध का प्रत्येक चिह्न गायब हो जाता है । इन रहस्यमय प्रतीकों को एक गुप्त अर्थ दे देने के फलस्वरूप जो गडबड़ी पैदा होती है, वह इसलिए और भी बढ़ जाती है कि द्रव्य के इन नामों द्वारा पण्यों के मूल्यों का और उसके साथ-साथ धातु का जो वजन द्रव्य का मापदंड, उसके अशेषभाजक खंडों को भी व्यक्त किया जाता है ।[60] दूसरी ओर, पण्यों के तरह-तरह के शारीरिक रूपों से मूल्य को अलग देख पाने के लिए यह नितांत आवश्यक है कि वह यह भौतिक एवं निरर्थक, किन्तु साथ ही विशुद्ध सामाजिक रूप धारण कल ले ।[61]

दाम किसी पण्य में मूर्त होनेवाले श्रम का द्रव्य-नाम होता है । इसलिए जो रकम किसी पण्य का दाम है, उसके साथ उस पण्य की समतुल्यता की अभिव्यंजना एक पुनरुक्ति मात्र होती है,[62] जैसे कि किसी भी पण्य के सापेक्ष मूल्य की अभिव्यंजना में सामान्यतया दो पण्यों की समतुल्यता ही व्यक्त की जाती है । किन्तु दाम यद्यपि पण्य के मूल्य के परिमाण का द्योतक होने के कारण द्रव्य के साथ उसके विनिमय के अनुपात का द्योतक होता है, तथापि उससे यह निष्कर्ष नहीं निकलता विनिमय के इस अनुपात का द्योतक अनिवार्य रूप से पण्य के मूल्य के परिमाण का द्योतक भी होता है । मान लीजिये कि क्रमशः १ क्वार्टर गेहूं और २ पाउंड (लगभग आधा आउंस सोना) सामाजिक दृष्टि से आवश्यक श्रम की दो समान मात्राओं का प्रतिनिधित्व करते हैं । इस हालत में २ पाउंड १ क्वार्टर गेहूं के मूल्य के परिमाण की द्रव्य के रूप में अभिव्यंजना होंगे, यानी २ पाउंड १ क्वार्टर गेहूं का दाम होंगे । अब यदि कुछ परिस्थितियों के कारण इस दाम को बढ़कर ३ पाउंड कर देना संभव हो जाये या उसे घटाकर १ पाउंड कर देना जरूरी हो जाये, तब ३ पाउंड या १ पाउंड ही उसके दाम हो जायेंगे, हालाँकि सच पूछिये, तो ३ पाउंड और १ पाउंड १ क्वार्टर गेहूं का मूल्य व्यक्त करने के लिए या तो बहुत

ज्यादा होंगे या बहुत कम । इसका कारण यह है कि एक तो तीन पाउंड वे रूप हैं, जिनमें गेहूं का मूल्य प्रकट होता है, यानी वे द्रव्य हैं, और दूसरे, वे द्रव्य के साथ गेहूं के विनिमय-अनुपात के द्योतक हैं । यदि उत्पादन की परिस्थितियाँ स्थिर रहती है, दूसरे शब्दों में , यदि श्रम की उत्पादन-शक्ति एक सी रहती है, तो दाम में परिवर्तन होने के पहले भी और बाद में भी एक क्वार्टर गेहूं के पुनरुत्पादन में पहले जितना ही सामाजिक श्रम-काल खर्च करना होगा । यह बात न तो गेहूं पैदा करनेवाले की इच्छा पर निर्भर करती है और न ही अन्य पण्यों के मालिकों की इच्छा पर । मूल्य का परिमाण सामाजिक उत्पादन के एक संबंध को व्यक्त करता है । यह परिमाण किसी वस्तु विशेष और उसके उत्पादन के लिए समाज के कुल श्रम-काल के आवश्यक भाग के बीच अनिवार्य रूप से रहनेवाले संबंध को व्यक्त करता है । जैसे ही मूल्य का परिमाण दाम में बदल दिया जाता है, वैसे ही उपर्युक्त अनिवार्य संबंध किसी एक पण्य तथा द्रव्य-पण्य नामक एक अन्य पण्य के बीच कमोबेश संयोगिक ढंग से स्थापित हो जानेवाले विनिमय-अनुपात का रूप धारण कर लेता है । लेकिन विनिमय-अनुपात या तो पण्य के मूल्य के वास्तविक परिमाण को व्यक्त कर सकता है,या उस मूल्य से कम या ज्यादा सोने की उस मात्रा को व्यक्त कर सकता है, जिसके एवज में परिस्थतियों के अनुसार वह पण्य हस्तांतरित किया जाना संभव है । इसलिए दाम तथा मूल्य के परिमाण के बीच परिमाणात्मक असंगति पैदा हो जाने, या दाम के मूल्य के परिमाण से भिन्न हो जाने की संभावना तो खुद दाम-रूप में ही निहित है । यह उसका कोई दोष नहीं हैं बल्कि इसके विपरीत यह संभावना तो दाम-रूप को बड़े सुंदर ढंग से उत्पादन की उस प्रणाली के अनुरूप ढाल देती है, जिसके अंतर्निहित नियम केवल ऐसी अनियमितताओं के मध्यमान के रूप में ही लागू होते हैं, जो उपर से देखने में किसी नियम के अधीन नहीं होतीं, पर जो एक दूसरे के असर को बराबर कर देती हैं.

किन्तु दाम-रूप ने केवल मूल्य के परिमाण और दाम की – यानी मूल्य के परिमाण और उसकी द्रव्य-अभिव्यंजना की – असंगति की संभावना के अनुरूप है, बल्कि उसमें गुणात्मक असंगति भी छिपी हो सकती है । यह असंगति इस हद तक जा सकती है कि यद्यपि द्रव्य पण्यों के मूल्य-रूप के सिवा और कुछ नहीं होता, फिर भी यह संभव है कि दाम मूल्य को कतई तौर पर व्यक्त करना बंद कर दे । कुछ वस्तुएं हैं, जो खुद पण्य नहीं हैं, जैसे अंतःकरण, आत्मसम्मान, आदि, पर जिनके मालिक उनको बेच सकते हैं और जो इस तरह अपने दामों के माध्यम से पण्यों का रूप धारण कर सकते हैं । अतएव किसी वस्तु में मूल्य न होते हुए भी उसका दाम हो सकता है । ऐसी सूरत में दाम गणित की कुछ राशियों की भांति काल्पनिक होता है । दूसरी ओर, यह भी संभव है कि काल्पनिक दाम-रूप कभी-कभार किसी प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष वास्तविक मूल्य-संबंध पर पर्दा डाल दे । उदाहरण के लिए, परती जमीन का कोई मूल्य नहीं होता, क्योंकि उसमें किसी प्रकार का मानव-श्रम नहीं लगा होता, पर उसका दाम हो सकता है ।

आमतौर पर सापेक्ष मूल्य की भांति दाम भी किसी पण्य का (जैसे एक टन लोहे का) मूल्य इस प्रकार व्यक्त करता है कि समतुल्य की अमुक मात्रा का (जैसे एक आउंस सोने का) लोहे के साथ सीधा विनिमय हो सकता है, कदापि व्यक्त नहीं करता । इसीलिए यदि किसी पण्य को व्यवहार में कारगर ढंग से विनिमय-मूल्य की तरह काम करना है, तो उसके लिए जरूरी है कि वह अपना शारीरिक रूप त्याग दे और केवल काल्पनिक

सोना न रहकर वास्तविक सोना बन जाये, हालाँकि पण्य के लिए यह पदार्थांतरण हेगेल की "धारणा" के "आवश्यकता" से "स्वतन्त्रता" तक पहुंच जाने, झींगा मछली के अपना खोल उतरकर फैंक देने अथवा संत जेरोम के बाबा आदम से मुक्ति पा जाने [63] की अपेक्षा अधिक कठिन सिद्ध हो सकता है । कोई पण्य (जैसे, मिसाल के लिए, लोहा) अपने वास्तविक रूप के साथ-साथ हमारी कल्पना में सोने का रूप तो ले सकता है, पर वह एक ही समय में सचमुच सोना और लोहा दोनों नहीं हो सकता । उसका दाम तय करने के लिए यह काफी होता है कि कल्पना में सोने के बराबर कर दिया जाये । पर यदि उसे एक सार्विक समतुल्य के रूप में अपने मालिक के काम आना है, तो इसके लिए जरूरी है कि उसके स्थान पर सचमुच सोना आ जाये । यदि लोहे का मालिक विनिमय के लिए पेश किये गये किसी अन्य पण्य के मालिक के पास जाकर लोहे के दाम का हवाला दे और उसकी बिना पर यह दावा करे कि लोहा अभी से द्रव्य बन गया है, तो उसको वही जवाब मिलेगा, जो स्वर्ग में संत पीटर ने दांते को दिया था, जब उसने यह श्लोक पढ़ा था कि

"इस सिक्के के धातु-मिश्रण और तौल की तो काफी चर्चा हो चुकी, पर अब मुझे यह बता कि क्या यह सिक्का तेरी जेब में है ।"

अतएव दाम का अर्थ जहाँ यह होता है कि किसी पण्य का द्रव्य के साथ विनिमय हो सकता है, वहाँ उसका अर्थ यह भी होता है कि उसका द्रव्य के साथ विनिमय होना जरूरी है । दूसरी ओर, सोना मूल्य की आदर्श माप के रूप में केवल इसीलिए काम में आता है कि उसने विनिमय की क्रिया के दौरान पहले से अपने आपको द्रव्य-पण्य के रूप में जमा लिया है। मूल्यों की आदर्श माप के पीछे वास्तव में नकदी छिपी रहती है.

---

49. यह सवाल कि द्रव्य सीधे श्रम-काल का प्रतिनिधित्व क्यों नहीं करता, जिससे कि, मिसाल के लिए, कागज़ का एक टुकड़ा x घंटे के श्रम का प्रतिनिधित्व कर पाए – यह सवाल, यदि उसकी तह तक पहुंचा जाये, तो असल में वैसे ही सवाल बन जाता है कि यदि पण्यों का उत्पादन पहले से ही मान लिया जाता है, तो श्रम से उत्पन्न होनेवाली वस्तुओं को पण्यों का रूप क्यों धारण करना पड़ता है ? इसका कारण स्पष्ट है, क्योंकि श्रम से पैदा होनेवाली वस्तुओं के पण्यों का रूप धारण करने का यह मतलब भी होता है कि वे पण्यों तथा द्रव्य में बंट जाती हैं । या इसी तरह का एक और सवाल यह है कि निजी श्रम को -यानी व्यक्तियों के निमित्त किये गये श्रम को – उसका उल्टा, अव्यवहित समाजिक श्रम क्यों नहीं समझा जा सकता ? अन्यत्र मैंने पण्यों के उत्पादन पर आधारित समाज में "श्रम-द्रव्य" के कल्पनावादी विचार पर भरपूर विश्लेषण किया है । (देखिये Zur Kritik der Politischen Oekonomie, pri. 61 aur age) । इस विषय के संबंध में मैं यहाँ केवल इतना ही और कहूँगा कि जैसे, मिसाल के लिए, थियेटर का टिकट द्रव्य नहीं होता, वैसे ही ओवेन का "श्रम-द्रव्य" भी द्रव्य नहीं हो सकता. ओवेन सीधे तौर पर संबद्ध श्रम को, उत्पादन के एक ऐसे रूप को मानकर चलते हैं, जो पण्यों के उत्पादन से कतई मेल नहीं खता । श्रम का प्रमाणपत्र केवल इस बात का सबूत है कि व्यक्ति विशेष ने सामूहिक श्रम में भाग लिया है और सामूहिक उत्पाद के उपभोग के लिए निर्धारित भाग के एक निश्चित अंश पर उसका अधिकार है । लेकिन यह बात ओवेन के दिमाग में कभी नहीं आती कि पहले से पण्यों का उत्पादन मानकर चला जाये और उसके साथ-साथ द्रव्य की बाजीगरी के ज़रिये उत्पादन की इस विधि की लाजिमी शर्तों से भी बचने की कोशिश की जाये ।

50. जंगली और अर्ध-सभ्य जातियां अपनी जबान का भिन्न रूप से प्रयोग करती हैं । बाफिनफिन की खाड़ी के पश्चिम तट के निवासियों के बारे में कप्तान पैरी ने बताया है : "इस सूरत में (वह वस्तुओं की अदला-बदली का जिक्र कर रहा है) वे लोग उसे (यानी उस चीज को, जो अदला-बदली के लिए उनके सामने पेश की गयी है) जबान से दो बार चाटते थे और चाटने के बाद मानो समझते थे कि सौदा संतोषजनक ढंग से हो गया है । "इस तरह पूर्वी एस्कीमो जाति के लोग भी विनिमय में मिलनेवाली वस्तुओं को चाटा करते थे । यदि उत्तर में इस तरह जबान वस्तुओं पर अपना स्वामित्व स्थापित करने के साधन की तरह इस्तेमाल की जाती थी , तो कोई आश्चर्य नहीं कि दक्षिण में संचित संपत्ति के बारे में जानने का साधन पेट है और काफ़िर जाति के लोग आदमी के

पेट का आकार देखकर उसकी दौलत का अनुमान लगाते हैं । काफ़िर लोग समझ-बूझकर ही यह करते हैं, इसका सबूत यह है कि ठीक उसी समय , जब १८६४ के ब्रिटिश स्वस्थ्य रिपोर्ट ने इस तथ्य पर प्रकाश डाला था कि मजदूर वर्ग के अधिकतर भाग को चर्बीवृद्धि में सहायक खाद्य-पदार्थ नहीं मिलते, तब डॉ, हार्वे नामक एक व्यक्ति (बेशक रक्त-संचार के विख्यात आविष्कारक हार्वे से भिन्न व्यक्ति) ने बुर्जुआ वर्ग और अभिजात वर्ग के लोगों की फालतू चरबी घटाने के नुसखों के विज्ञापन करके खूब हाथ रंगे थे ।

51. देखिये Karl Marx, Zur Kritik etc. Theorien von der Masseinheit des Geldes, S.53, seq.

52. जहाँ कभी भी कानूनी तौर पर सोने और चाँदी दोनों से साथ-साथ द्रव्य का, या मूल्य की माप का, काम लिया गया है, वहाँ सदा इस बात की बेकार कोशिश की गयी है कि दोनों को एक ही पदार्थ समझा जाये । यह मानकर चलना कि सोने और चाँदी के ऐसे परिमाणों के बीच, जिनमें श्रम-काल का एक निश्चित परिमाण निहित है, सदा एक ही अनुपात रहता है, जो कभी नहीं बदलता, असल में यह मान लेने के समान है कि सोना और चाँदी दोनों एक ही पदार्थ हैं और कम मूल्य धातु -चाँदी – की एक निश्चित राशी सोने की एक निश्चित राशी का एक ऐसा अंश है, जिसमें कभी कोई परिवर्तन नहीं होता । एडवर्ड तृतीय के राज्य-काल से जार्ज द्वितीय के राज्य-काल तक इंग्लैण्ड में द्रव्य का इतिहास सोने और चाँदी के मूल्यों के बीच कानूनी तौर पर निर्धारित अनुपात और उनके वास्तविक मूल्यों के उतार-चढ़ाव के टकराव से पैदा होनेवाले अनेक गडबडियों के एक लंबे क्रम का इतिहास है । एक समय सोना बहुत ऊँचे चढ़ जाता था, दूसरे समय चाँदी । जिस समय जिस धातु की कीमत उसके मूल्य से कम लगाई जाती थी, उस समय वह धातु संचलन से निकाल ली जाती थी और उसके सिक्कों को गलाकर विदेशों को भेज दिया जाता था । तब दोनों धातुओं के अनुपात को कानून द्वारा फिर बदल दिया जाता था, लेकिन यह नया नाममात्र का अनुपात शीघ्र ही फिर वास्तविक अनुपात से टकरा जाता था । हमारे अपने जमाने में भारत और चीन में चाँदी की मांग होने के परिणामस्वरूप चाँदी की तुलना में सोने के मूल्य में जो थोड़ी सी क्षणिक कमी हुई थी, उससे फ़्रांस में यही बात और भी विस्तृत पैमाने पर देखने में आई थी, यानी वहाँ भी चाँदी का निर्यात होने लगा था और सोने ने उसे संचलन से बाहर कर दिया था । १८५५, १८५६ और १८५७ में फ़्रांस से बाहर जानेवाले सोने की तुलना में फ़्रांस में आनेवाले सोने की कीमत ४,१५,८०,००० पाउंड अधिक थी, जब कि फ़्रांस से चाँदी के निर्यात की कीमत आयात की तुलना में ३,४७,०४,००० पाउंड अधिक थी । सच तो यह है कि जिन देशों में कानून की दृष्टि से दोनों धातुएं मूल्य की माप का काम करती हैं और इसलिए दोनों वैध मुद्रा मानी जाती हैं, जिससे कि हर व्यक्ति दोनों में से किसी भी धातु में भुगतान कर सकता है, उन देशों में जिस धातु का मूल्य उपर चढ़ जाता है, उसका महत्त्व बढ़ जाता है, और दूसरे प्रत्येक पण्य की भांति वह अपना दाम उस धातु में मापने लगती है, जिसका मूल्य अधिक लगाया जा रहा है और जो अब असल में अकेली ही मूल्य के मापदंड का काम कर रही है । इस प्रश्न के संबंध में समस्त अनुभव और इतिहास का निष्कर्ष केवल यह है कि जहाँ कहीं कानून के अनुसार दो पण्यों से मूल्य की माप का काम लिया जाता है, वहां व्यवहार में उनमें से केवल एक ही इस स्थिति को कायम रख पाता है । " (Karl Marx, Zur Kritik der Politischen Oekonomie, S. 52.53.)

53. इंग्लैण्ड में एक आउंस सोना तो द्रव्य के मापदंड की इकाई का काम करता है, पर पाउंड स्टर्लिंग सिक्का उसका अशेषभाजक खंड नहीं होता. इस विचित्र स्थिति का यह कारण बताया गया है कि "हमारी सिक्कों की प्रणाली पहले केवल चाँदी के प्रयोग के आधार पर ही ढाली गयी थी, इसलिए एक आउंस चाँदी हमेशा ही सिक्कों की एक निश्चित संख्या में बांटी जा सकती है; लेकिन इस प्रणाली में सोने का इस्तेमाल चूँकि बाद में शुरू हुआ, इसलिए एक आउंस सोने के सिक्के अशेषभाजक संख्या में नहीं बनाये जा सकते ।" (Maclaren, A Sketch of the History of the Currency, London, 1858, P. 16.)

54. अंग्रेजी लेखकों ने तो मूल्य की माप (measure of value) और दाम के मापदंड (standard of value) को इस बुरी तरह एक दूसरे से उलझा दिया है कि उसका वर्णन नहीं किया जा सकता । उनकी रचनाओं में लगातार एक के कामों की जगह दूसरे के कामों का वर्णन और एक के नाम की जगह दूसरे के नाम का उपयोग मिलता है ।

55. कवियों का काल्पनिक काल-क्रम ऐतिहासिक दृष्टि से भी आम तौर पर सत्य नहीं है.

56. यही कारण है कि अंग्रेजी पाउंड स्टर्लिंग का शुरू में जो वजन था, अब उसका एक तिहाई से कम वजन रह गया है । स्कॉटलैंड और इंग्लैण्ड के एक हो जाने के पहले स्कॉटिश पाउंड का वजन उसके शुरू के वजन का केवल १/३६ रह गया था, फ़्रांस के लीवर का वजन १/७४ रह गया था, स्पेन के मारावेदी का वजन १/१,००० से भी कम रह गया था और पुर्तगाली रे का वजन उससे भी कम रह गया था ।

57. जो मुद्राएँ आज काल्पनिक हैं, वे प्रत्येक जाति की अति प्राचीन मुद्राएँ हैं. एक समय वे सब वास्तविक थीं, और चूँकि वे वास्तविक थीं, इसलिए हिसाब रखने के लिए उनका प्रयोग होता था । " (Galiani, Della Moneta, p. 153.)

58. डेविड अर्कहार्ट ने अपनी रचना Familiar Words में इस भयानक ज्यादती (!) का जिक्र किया है कि आजकल पाउंड (स्टर्लिंग), जो द्रव्य के अंग्रेजी मापदंड की इकाई है, लगभग चौथाई आउंस सोने के बराबर रह गया है । उन्होंने लिखा है कि " यह मापदंड कायम करना नहीं, माप को झूठा बना देना है ।" दूसरी हर चीज की तरह सोने की तौल के इस "झूठे मान" में भी अर्कहार्ट सभ्यता का हाथ देखते हैं, जो उनकी राय में हर चीज को झूठा बना देती है ।

59. जब अनाकार्सिस से पूछा गया कि यूनानी लोग द्रव्य से क्या काम लेते हैं, तो उसने जवाब दिया : "हिसाब रखने का ।" (Athenaeus, Deipnosophistarum [libri quindecim], I, IV, 49, v. II, ed. Schweighauser, 1802, [p.120.])

60. द्रव्य जब दाम के मापदंड का काम करता है, तब वह हिसाब रखने के उन्हीं नामों में सामने आता है, जिन नामों में पण्यों के दाम सामने आते हैं, और इसलिए ३ पाउंड १७ शिलिंग और साढ़े १० पेंस की रकम का मतलब एक तरफ तो एक आउंस वजन का सोना हो सकता है और दूसरी तरह, उसका मतलब एक टन लोहे का मूल्य हो सकता है । इसलिए कि इस हिसाब रखने के नाम को उसका टकसाली दाम कहा गया है । इसी से यह असाधारण धारणा पैदा हुई कि सोने के मूल्य का खुद उसी के पदार्थ के रूप में अनुमान लगाया जाता है और दूसरे तमाम पण्यों के विपरीत उसका दाम राज्य निश्चित करता है । यह भ्रान्ति इस गलत विचार से पैदा हुई कि सोने के कुछ निश्चित वजनों को हिसाब रखने के कुछ नाम दे देना और इन वजनों का मूल्य तय कर देना एक ही बात है । " (Karl Marx, l.c., S. 52.)

61. देखिये Zur Kritik der Politischen Oekonomie. Theorien von der Masseinheit des Geldes, S.53. सोने या चाँदी के कुछ निश्चित वजनों को पहले से जो क़ानूनी नाम मिल गये हैं वही नाम इन धातुओं के थोड़े कम या ज्यादा वजनों को देकर द्रव्य के टकसाली दाम को कम कर देने या बढ़ा देने की कुछ अजीबोगरीब धारणाएँ देखने में आती हैं । कम से कम जिन मामलों में इन धारणाओं का उद्देश्य भोंडे आर्थिक दांव-पेंचों के जरिये सार्वजनिक तथा निजी दोनों ही प्रकार के ऋणदाताओं की गिरह काटना नहीं, बल्कि नीम हकीमों जैसे आर्थिक नुस्खे पेश करना है, उन मामलों में उनपर विलियम पैटी ने अपनी रचना Quantulumcunque Concerning Money. To the Lord Marquis of Halifas, 1682 में इतने मुकम्मिल तौर पर विचार किया है कि उनके बाद के अनुयायियों की बात तो रही दूर, तात्कालिक अनुयायी – सर डड्ली नोर्थ और जॉन लॉक – भी अधिक से अधिक उनके शब्दों में केवल पानी ही मिला पाए हैं । पैटी ने लिखा है : " यदि ऐलान के जरिये किसी जाति की दौलत दस गुना बढ़ाई जा सकती है, तो फिर यह बड़े आश्चर्य की बात है कि हमारे गवर्नरों ने बहुत पहले ही ऐसे ऐलान क्यों नहीं जारी कर दिए." (l.c..36.)

62. "यदि ऐसा न होता, तो हमें यह मानना पड़ता कि द्रव्य के रूप में दस लाख के मूल्य के बिकाऊ सामान के रूप में समान मूल्य की अपेक्षा ज्यादा कीमत होती है" (Le Trosne, i.c.,p. 919.) जो यह कहने के बराबर है कि "किसी मूल्य की उसके समान मूल्य से ज्यादा कीमत होती है."

63. जेरोम को न केवल अपनी युवावस्था में भौतिक काया से कठिन संघर्ष करना पड़ा था, जो इस बात से स्पष्ट है कि मरुस्थल में उन्हें अपने कल्पना-लोक की सुंदर नारियों से जूझना पड़ा था, बल्कि उनको अपनी वृद्धावस्था में अध्यात्मिक काया से भी कठिन संघर्ष करना पड़ा था । जेरोम ने कहा है : मैंने समझा कि मैं विश्व के न्यायाधीश के दरबार में आत्मा के रूप में पेश हूँ । तभी एक आवाज ने प्रश्न किया : तू कौन है ?' मैं ईसाई हूँ.' तू झूठ बोलता है,' वह महान न्यायाधीश गरजकर बोला, 'तू सिसेरोवादी है, और कुछ नहीं ।' "

अनुभाग 2 – परिचलन का माध्यम

क) पण्यों का रूपांतरण

हम पहले एक अध्याय में देख चुके हैं कि पण्यों के विनिमय के लिए कुछ परस्पर विरोधी और एक दूसरे का अपवर्जन करनेवाली परिस्थितियाँ आवश्यक होती हैं । जब पण्यों में पण्य और द्रव्य का भेद पैदा हो जाता है, तब उससे ये असंगतियाँ दूर नहीं हो जाती, बल्कि उससे एक ऐसी modus vivendi [व्यवस्था], या यूँ कहिये कि एक ऐसा रूप निकल आता है, जिसमें ये असंगतियाँ साथ-साथ कायम रह सकती हैं । आमतौर पर वास्तविक विरोधों का इसी तरह समाधान किया जाता है । मिसाल के लिए , किसी वस्तु के बारे में यह कहना एक परस्पर विरोधी बात है कि वह लगातार किसी दूसरी वस्तु की ओर गिर भी रही है और साथ ही लगातार उससे दूर भी होती जा रही है । परन्तु दीर्घवृत गति का एक ऐसा रूप है, जो इस विरोध को बनाये भी रखता है और साथ ही उसका समाधान भी कर देता है ।

जहाँ तक विनिमय एक ऐसी प्रक्रिया है, जिसके द्वारा पण्य उन हाथों से निकलकर, जिनके लिए वे गैर-उपयोग-मूल्य हैं, उन हाथों में पहुंच जाते हैं, जिनके पास वे उपयोग-मूल्य हो जाते हैं, वहाँ तक वह विनिमय पदार्थ का सामाजिक परिचलन है । उसके द्वारा एक ढंग के उपयोगी श्रम का उत्पाद दूसरे ढंग के उपयोगी श्रम के उत्पाद का स्थान ले लेता है । जब एक बार कोई पण्य उस विश्राम-स्थल पर पहुंच जाता है, जहाँ वह उपयोग-मूल्य का काम कर सकता है, तब वह विनिमय के क्षेत्र से निकलकर उपभोग के क्षेत्र में चला जाता है । लेकिन इस समय हमारी दिलचस्पी केवल विनिमय के क्षेत्र में ही है । इसलिए अब हमें विनिमय पर एक औपचारिक दृष्टि से विचार करना होगा और पण्यों के उस रूप-परिवर्तन – अथवा रूपांतरण – की छानबीन करनी होगी, जिसके द्वारा पदार्थ का सामाजिक परिचलन कार्यांवित होता है ।

साधारणतया इस रूप-परिवर्तन को बहुत अपूर्ण ढंग से समझा जाता है । इस अपूर्णता का कारण खुद मूल्य के बारे में लोगों में बहुत अस्पष्ट धारणाएँ होने के अलावा यह है कि किसी भी पण्य के रूप में होनेवाला प्रत्येक परिवर्तन दो पण्यों के विनिमय के फलस्वरूप होता है, जिनमें से एक तो साधारण पण्य होता है और दूसरा द्रव्य-पण्य होता है । यदि हम केवल इस भौतिक तथ्य को अपने सामने रखते हैं कि किसी पण्य का सोने के साथ विनिमय किया गया है, तो हम उसी चीज को अनदेखा कर देते हैं, जिसे हमें देखना चाहिए था – और वह यह कि पण्य के रूप को क्या हो गया है । हम इन तथ्यों को अनदेखा कर देते हैं कि जब सोना महज पण्य होता है, जब वह द्रव्य नहीं होता, और जब दूसरे पण्य अपने दामों को सोने के रूप में व्यक्त करते हैं, तब यह सोना खुद इन पण्यों का द्रव्य-रूप भर होता है ।

शुरू में पण्य अपने स्वाभाविक रूप में विनिमय की प्रक्रिया में प्रवेश करते हैं । फिर यह प्रक्रिया उनमें पण्य और द्रव्य का भेद पैदा कर देती है और इस प्रकार पण्यों के एक साथ उपयोग-मूल्य और मूल्य होने के नाते उनमें अंतर्निहित विरोध के अनुरूप एक बाहरी विरोध भी पैदा कर देती है । उपयोग-मूल्यों के रूप में पण्य अब विनिमय-मूल्य के रूप में द्रव्य के मुकाबले में आ खड़े होते हैं । दूसरी तरफ, दोनों विरोधी पक्ष

पण्य ही होते हैं, यानी दोनों उपयोग-मूल्य तथा मूल्य की एकता होते हैं । लेकिन भिन्नताओं की यह एकता दो विरोधी ध्रुवों पर प्रकट होती है और प्रत्येक ध्रुव पर विरोधी ढंग से प्रकट होती है । ध्रुव होने के कारण दोनों अनिवार्य रूप से वैसे ही परस्पर विरोधी होते हैं, जैसे परस्पर संबद्ध भी होते हैं । समीकरण के एक तरफ एक साधारण पण्य होता है, जो वास्तव में एक उपयोग-मूल्य है । उसका मूल्य दाम के रूप में केवल प्रत्ययात्मक ढंग से व्यक्त होता है, दाम के जरिये उसका अपने मूल्य के वास्तविक मूर्त रूप के तौर पर अपने विरोधी – सोने – के साथ समीकरण किया जाता है । दूसरी ओर , सोना अपनी धातुगत वास्तविकता में मूल्य के साकारीभूत रूप में, यानी द्रव्य के रूप में, विद्यमान है । सोना सोने के रूप में स्वयं विनिमय-मूल्य होता है । जहाँ तक उसके उपयोग-मूल्य का संबंध है, उसका केवल प्रत्ययात्मक अस्तित्व है, जिसका प्रतिनिधित्व सापेक्ष मूल्य की अभिव्यंजनाओं का वह क्रम करता है, जिसमें से पण्यों के विनिमय की प्रक्रिया को गुजरना पड़ता है और जिनमें से होकर वह संपन्न होती है ।

आइये, अब हम किसी पण्य के मालिक -मिसाल के तौर पर, अपने पुराने मित्र, कपड़ा बुननेवाले बुनकर -के साथ कार्यस्थल में, यानी मंडी में चलें. उसके २० गज कपड़े का एक निश्चित दाम है । मान लीजिये, उसका दाम २ पाउंड है । वह कपड़े का २ पाउंड के साथ विनिमय कर डालता है, और फिर पुराने ढंग का आदमी होने के नाते वह इसी दाम को एक पारिवारिक बाइबल के एवज में, दे डालता है, जो अब एक उपयोगी वस्तु के रूप में उसके घर में प्रवेश करेगी और घर के निवासियों का नैतिक स्तर ऊपर उठाने के काम में आयेगी । इस प्रकार विनिमय दो परस्पर विरोधी और फिर भी एक दूसरे के पूरक रूपान्तरणों द्वारा संपन्न होता है : एक रूपांतरण में पण्य द्रव्य में बदल दिया जाता है, दूसरे में द्रव्य फिर पण्य में बदल दिया जाता है ।[64] इस रूपांतरण की ये दो अवस्थाएँ दो अलग-अलग कार्य हैं, बुनकर जिनको सम्पन्न करता है । एक बार बेचता है, यानी द्रव्य से पण्य का विनिमय करता है । दूसरी बार वह खरीदता है, यानी एक पण्य से द्रव्य का विनिमय करता है । इन दो कार्यों में एकता भी है, क्योंकि वह खरीदने के लिए बेचता है ।

इस पूरे कार्यकलाप का बुनकर के लिए यह नतीजा निकलता है कि अब उसके पास कपड़े के बजाय बाइबल होती है; शुरू में जो पण्य उसके पास था, अब उसके बजाय उसके पास इतने ही मूल्य का, लेकिन एक भिन्न उपयोग का एक न्य पण्य आ जाता है । वह अपने जीवन-निर्वाह के अन्य साधन तथा उत्पादन के साधन भी इसी ढंग से प्राप्त करता है । उसके दृष्टिकोण से इस पूरी क्रिया के द्वारा इससे अधिक और कुछ नहीं संपन्न होता कि उसके श्रम के उत्पाद का किसी और के श्रम के उत्पाद से विनिमय हो जाता है, उसके द्वारा उत्पादित वस्तुओं के विनिमय से अधिक और कुछ नहीं होता ।

अतएव पण्यों के विनिमय के साथ-साथ उनके रूप में निम्नलिखित परिवर्तन हो जाता है :

पण्य	द्रव्य	पण्य
C	M	C

जहाँ तक खुद वस्तुओं का संबंध है, पूरी क्रिया का फल होता है C – C , यानी एक पण्य के साथ दूसरे पण्य का विनिमय, अर्थात भौतिक रूप प्राप्त सामाजिक श्रम का परिचलन । जब यह फल प्राप्त हो जाता है, तब क्रिया समाप्त हो जाती है।

C – M. पहला रूपांतरण, अथवा बिक्री

मूल्य पण्य के शरीर से छलांग मारकर जिस प्रकार सोने के शरीर में पहुंच जाता है, वह जैसा कि मैंने अन्यत्र कहा है, पण्य की salto mortale [मौत की छलांग] होती है । यदि छलांग में पूरी सफलता नहीं मिलती, तो खुद पण्य का तो कुछ नहीं होता, पर उसके मालिक का निश्चय ही नुकसान होता है । उसके मालिक की आवश्यकताएँ जितनी बहुमुखी हैं, सामाजिक श्रम-विभाजन उसके श्रम को उतना ही एकांगी बना देता है । ठीक यही कारण है कि उसके श्रम का उत्पाद केवल विनिमय-मूल्य के रूप में ही उसके काम आता है । लेकिन वह सामाजिक दृष्टि से मान्य सार्विक समतुल्य का गुण केवल तभी प्राप्त कर सकता है, जब कि उसे द्रव्य में बदल डाला जाये । किन्तु वह द्रव्य किसी और की जेब में है । उस जेब से द्रव्य को बाहर निकलने के लिए सबसे ज्यादा जरूरी बात यह है कि हमारे मित्र का पण्य द्रव्य के मालिक के लिए उपयोग-मूल्य हो । इसके लिए यह आवश्यक है कि पण्य पर खर्च किया गया श्रम सामाजिक दृष्टि से उपयोगी हो, अर्थात वह श्रम सामाजिक श्रम-विभाजन के एक शाखा हो । लेकिन श्रम-विभाजन उत्पादन की एक ऐसी प्रणाली है, जिसका स्वयंस्फूर्त ढंग से विकास हुआ है और यह विकास उत्पादकों के पीछे-पीछे अब भी जारी है । जिस पण्य का विनिमय होता है, वह, संभव है, किसी नये प्रकार के श्रम का उत्पाद हो, जो किन्हीं नयी आवश्यकताओं को पैदा कर देना का भी दावा करता हो। कल तक जो क्रिया विशेष संभवत: किसी पण्य को तैयार करने के लिए किसी उत्पादक द्वारा कि जानेवाली अनेक क्रियाओं में से एक ही थ, वह हो सकता है कि आज अपने को इस संबंध से अलग कर ले, अपने को श्रम की एक स्वतंत्र शाखा के रूप में जमा ले और अपने अपूर्ण उत्पाद को एक स्वतंत्र पण्य के रूप में मण्डी में भेज दे। इस प्रकार के संबंध विच्छेद के लिए परिस्थितियाँ परिपक्व भी हो सकती हैं और अपरिपक्व भी. आज कोई उत्पाद एक सामाजिक आवश्यकता पूरी करता है । कल को मुमकिन है कि और अधिक उपयोगी उत्पाद पूर्णतया अथवा आंशिक रूप से उस वस्तु का स्थान ले ले । इसके अलावा, हमारे बुनकर का श्रम सामाजिक श्रम-विभाजन की एक मान्य शाखा तो हो सकता है, परन्तु यह बात उसके २० गज कपड़े की उपयोगिता की गारंटी करने के लिए काफी नहीं है. यदि समाज की कपड़े की आवश्यकता – और प्रत्येक दूसरी आवश्यकता की तरह इस प्रकार की आवश्यकता की भी एक सीमा होती है – प्रतिद्वंद्वी बुनकरों के उत्पाद से पहले ही तृप्त हो गयी है, तो हमारे मित्र का उत्पाद फालतू, अनावश्यक और इसलिए अनुपयोगी हो जाता है. यह तो सही है कि जब घोडा मुफ्त में मिलता हो, तो कोई उसके दांत नहीं देखता, लेकिन हमारा मित्र लोगों को तोहफे बाँटने के लिए मंडी में नहीं घूमता. लेकिन मान लीजिये कि उसका उत्पाद वास्तव में उपयोगी-मूल्य सिद्ध होता है और इस प्रकार द्रव्य को अपनी ओर आकर्षित कर लेता है. तब सवाल उठता है कि वह कितने द्रव्य को अपनी ओर आकर्षित करेगा ? इसमें संदेह नहीं कि इस प्रश्न का उत्तर इस वस्तु के दाम के रूप में, अर्थात उसके मूल्य के परिमाण के द्योतक के रूप में , पहले से ही दे दिया गया है. मूल्य का हिसाब लगाने में यदि

हमारा मित्र अकस्मात कोई गलती कर गया है , तो उसकी ओर हम यहाँ कोई ध्यान नहीं देंगे, ऐसी गलती मंडी में जल्दी ठीक हो जाती है. हम यह भी मान लेते हैं कि उसने अपने उत्पाद पर केवल इतना ही श्रम खर्च किया है, जितना सामाजिक दृष्टि से औसतन आवश्यक है. अतएव, दाम केवल उसके पण्य में मूर्त होनेवाले सामाजिक श्रम की मात्रा का द्रव्य नाम है। लेकिन हमारे बुनकर से पूछे बिना और उसके पीठ पीछे कपड़ा बुनने के पुराने ढंग की प्रणाली में परिवर्तन हो जाता है। जो श्रमकाल कल तक निस्संदेह एक गज कपड़े के उत्पादन के लिए सामाजिक दृष्टि से आवश्यक था, वह आज अवस्यक नहीं रहता। .....

---

64. “जिस तरह सोना पण्यों में बदल जाता है और पण्य सोने में बदल जाते हैं, उसी तरह अग्नि सब वस्तुओं में बदल जाती है, और सब वस्तुएं अग्नि में बदल जाती हैं.” (F. Lassalle, Die Philosophie Herakleitos des Dunkeln, Berlin, 1858, Bd. I, S. 222.) पृ. २२४ पर लासाल ने इस अंश के संबंध में जो नोट (नोट ३) दिया है, उसमें उसने गलती से सोने को मूल्य का प्रतीक मात्र बना दिया है ।